GYAN MANTHAN
A MULITIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

Gyan Manthan
Journal homepage: www.gyanmanthan.org ISSN: **3108-3455**

आधुनिक शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली का समावेश: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. निशा पवार
प्राचार्य, एस्पायर इंस्टिट्यूट, इंदौर

सार

वर्तमान वैश्विक युग में शिक्षा प्रणाली तीव्र परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। आधुनिक शिक्षा ने विज्ञान, तकनीक और व्यावसायिक दक्षता के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की है, किन्तु इसके साथ ही नैतिक मूल्यों, सांस्कृतिक चेतना और मानसिक संतुलन में कमी भी देखने को मिल रही है। भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System - IKS) एक प्राचीन परंपरा है, यह अत्यंत समृद्ध और बहुआयामी रही है, जो समग्र विकास, नैतिकता, आध्यात्मिकता और प्रकृति के साथ संतुलन पर आधारित है। प्राचीन काल में गुरुकुल प्रणाली के माध्यम से शिक्षा केवल विषय-विशेष ज्ञान तक सीमित नहीं थी, शिक्षा में जीवन कौशल, नैतिकता और आध्यात्मिकता का भी समावेश था। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में तकनीकी और व्यावसायिक दक्षता पर अधिक जोर दिया जा रहा है, जिससे मानवीय और सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। अतः आवश्यक है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली को आधुनिक शिक्षा में समाहित किया जाए।

यह लेख आधुनिक शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली के समावेश की आवश्यकता, प्रासंगिकता, चुनौतियों तथा कार्यान्वयन रणनीतियों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है और यह दर्शाता है कि यदि शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली को समुचित रूप से शामिल किया जाए, तो यह न केवल शिक्षा को अधिक मानवीय और मूल्यपरक बनाएगी, बल्कि छात्रों के समग्र विकास को भी सुनिश्चित करेगी।

मुख्य शब्द (Keywords) भारतीय ज्ञान प्रणाली, आधुनिक शिक्षा, शिक्षा नीति

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक विकास का मूल आधार होती है। 21वीं सदी के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा केवल सूचना या कौशल प्रदान करने का माध्यम नहीं रह गई है,

GYAN MANTHAN A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

बल्कि यह मानव जीवन के समग्र विकास—बौद्धिक, भावनात्मक, नैतिक एवं आध्यात्मिक—का साधन बन चुकी है। वर्तमान में प्रचलित आधुनिक शिक्षा प्रणाली, जो मुख्यतः पाश्चात्य विचारधारा से प्रभावित है, वैज्ञानिकता, तर्कशीलता और तकनीकी दक्षता पर विशेष बल देती है। हालांकि यह प्रणाली आर्थिक विकास और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए उपयोगी सिद्ध हुई है, किन्तु इसके परिणामस्वरूप मूल्यहीनता, सांस्कृतिक विछिन्नता और मानसिक तनाव जैसी समस्याएँ भी उभरकर सामने आई हैं।

भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System - IKS) एक ऐसी समृद्ध परंपरा है, जिसमें सहस्राब्दियों से संचित ज्ञान, दर्शन, विज्ञान और जीवन मूल्यों का समन्वय देखने को मिलता है। वेद, उपनिषद, स्मृतियाँ, दर्शनशास्त्र, आयुर्वेद, योग, ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, गणित और खगोल विज्ञान जैसे विविध क्षेत्रों में भारतीय मनीषियों ने गहन अनुसंधान किया और एक ऐसी ज्ञान परंपरा विकसित की, जो मानव जीवन को संतुलित, नैतिक और सार्थक बनाने की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करती है।

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली, विशेषतः गुरुकुल व्यवस्था, केवल विषयगत ज्ञान तक सीमित नहीं थी, बल्कि उसमें जीवन जीने की कला, आत्मानुशासन, गुरु-शिष्य परंपरा, प्रकृति के प्रति सम्मान और समाज के प्रति उत्तरदायित्व जैसे तत्वों का समावेश था। इस संदर्भ में प्रसिद्ध उक्ति—

"सा विद्या या विमुक्तये" अर्थात् "वह विद्या ही सच्ची है जो मुक्ति प्रदान करे।"

GYAN MANTHAN A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

यह उद्धरण भारतीय शिक्षा दर्शन के मूल उद्देश्य को स्पष्ट करता है, जहाँ शिक्षा का लक्ष्य केवल आजीविका अर्जन नहीं, बल्कि आत्मबोध और जीवन की उच्चतर चेतना की प्राप्ति है।

इसी प्रकार, **स्वामी विवेकानंद** ने शिक्षा के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहा था—

"Education is the manifestation of the perfection already in man."
(शिक्षा मनुष्य में निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।)

यह कथन दर्शाता है कि शिक्षा बाहरी ज्ञान का आरोपण नहीं, बल्कि अंतर्निहित क्षमताओं के विकास की प्रक्रिया है। आधुनिक समय में जब शिक्षा प्रणाली अत्यधिक प्रतिस्पर्धात्मक और यांत्रिक होती जा रही है, तब छात्रों में तनाव, अवसाद और उद्देश्यहीनता जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। ऐसे में भारतीय ज्ञान प्रणाली के तत्व—जैसे योग, ध्यान, नैतिक शिक्षा, पर्यावरणीय संतुलन और आध्यात्मिक दृष्टिकोण—इन समस्याओं के समाधान में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

महात्मा गांधी ने भी शिक्षा के संदर्भ में कहा था—

"By Education, I mean an all-round drawing out of the best in child and man—body, mind and spirit."

यह दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से भारतीय ज्ञान परंपरा के समग्र शिक्षा सिद्धांत से मिलता है।

वर्तमान में **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020)** के माध्यम से भारत सरकार ने भारतीय ज्ञान प्रणाली को पुनः शिक्षा के मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया है। इस नीति में भारतीय भाषाओं, पारंपरिक ज्ञान, योग, कला और संस्कृति के समावेश पर विशेष बल दिया गया है।

एनईपी 2020 में भारतीय ज्ञान प्रणालियों का एकीकरण भारत के शिक्षा परिदृश्य में परिवर्तनकारी बदलाव लाने की क्षमता रखता है। ज्ञान के विविध रूपों को स्वीकार और शामिल करके नीति शिक्षा के लिए अधिक समावेशी और बहुलवादी दृष्टिकोण को बढ़ावा देती है, जो छात्रों की विविध सीखने की जरूरतों और हितों को पूरा करती है। यह भारतीय समाज को मजबूत करते हुए सांस्कृतिक गौरव और पहचान की भावना को भी बढ़ावा देती है।

GYAN MANTHAN
A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश किया जा सकता है, ताकि शिक्षा अधिक मानवीय, मूल्यपरक और जीवनोपयोगी बन सके।

भारतीय ज्ञान प्रणाली का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

भारतीय ज्ञान प्रणाली का इतिहास अत्यंत प्राचीन और समृद्ध है। वैदिक काल से ही शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं, बल्कि जीवन के उच्च आदर्शों को प्राप्त करना था। गुरुकुल प्रणाली में छात्र प्रकृति के निकट रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे, जहां अनुशासन, आत्मनिर्भरता और नैतिकता पर विशेष बल दिया जाता था।

उपनिषदों में ज्ञान को आत्मा और ब्रह्म के संबंध के रूप में समझाया गया है। आयुर्वेद ने स्वास्थ्य को शरीर, मन और आत्मा के संतुलन के रूप में परिभाषित किया। भारतीय विद्वानों ने गणित और खगोल विज्ञान में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली: स्वरूप और चुनौतियाँ

(i) स्वरूप:

- वैज्ञानिक और तकनीकी दृष्टिकोण
- रोजगारोन्मुख शिक्षा
- डिजिटल और ऑनलाइन शिक्षण

- वैश्विक प्रतिस्पर्धा

(ii) चुनौतियाँ:

- नैतिक मूल्यों का ह्रास
- मानसिक तनाव और अवसाद
- सांस्कृतिक पहचान का संकट
- शिक्षा का व्यावसायीकरण

भारतीय ज्ञान प्रणाली की आधुनिक शिक्षा में समावेश की आवश्यकता

1. समग्र विकास के लिए (Holistic Development)

आधुनिक शिक्षा प्रणाली प्रायः बौद्धिक (Cognitive) विकास तक सीमित रह जाती है, जिसमें ज्ञान, सूचना और कौशल पर अधिक जोर दिया जाता है। परिणामस्वरूप विद्यार्थियों का भावनात्मक (Emotional) और आध्यात्मिक (Spiritual) पक्ष उपेक्षित रह जाता है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) शिक्षा को एक **समग्र प्रक्रिया** के रूप में देखती है, जिसमें शरीर, मन और आत्मा—तीनों का संतुलित विकास आवश्यक माना गया है। गुरुकुल परंपरा में शिक्षा केवल पाठ्य ज्ञान तक सीमित नहीं थी, बल्कि जीवन कौशल, आत्मअनुशासन, ध्यान और आत्मचिंतन पर भी बल दिया जाता था।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार—"शिक्षा मनुष्य में निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।"

इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि व्यक्ति के अंतर्निहित गुणों को विकसित करना है। भारतीय ज्ञान प्रणाली के समावेश से शिक्षा अधिक संतुलित, जीवनोपयोगी और मानवीय बन सकती है।

2. नैतिक मूल्यों के विकास हेतु (Moral and Ethical Development)

वर्तमान समय में शिक्षा का व्यावसायीकरण बढ़ने के कारण नैतिक मूल्यों का ह्रास देखने को मिल रहा है। प्रतिस्पर्धा की दौड़ में छात्र अक्सर सफलता को ही अंतिम लक्ष्य मान लेते हैं, जिससे ईमानदारी, सहानुभूति और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्य पीछे छूट जाते हैं।

भारतीय ज्ञान प्रणाली सत्य, अहिंसा, करुणा, त्याग और सेवा जैसे मूल्यों पर आधारित है। इन मूल्यों का समावेश छात्रों में नैतिक चेतना और सामाजिक जिम्मेदारी विकसित करता है।

महात्मा गांधी ने शिक्षा को चरित्र निर्माण का माध्यम बताया था। उनके अनुसार—

"चरित्रहीन शिक्षा समाज के लिए घातक है।"

इस दृष्टि से IKS का समावेश छात्रों को केवल सफल नहीं, बल्कि **जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिक** बनाने में सहायक हो सकता है।

GYAN MANTHAN
A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

Gyan Manthan, Vol 2, Issue 5, pp 285-291 May 2026 ISSN: **3108-3455**

3. मानसिक स्वास्थ्य सुधार हेतु (Mental Health and Well-being)

आज के समय में छात्रों के बीच तनाव (Stress), चिंता (Anxiety) और अवसाद (Depression) जैसी समस्याएँ तेजी से बढ़ रही हैं। इसका मुख्य कारण अत्यधिक प्रतिस्पर्धा, परीक्षा का दबाव और जीवन में संतुलन की कमी है। भारतीय ज्ञान प्रणाली में योग, ध्यान (Meditation) और प्राणायाम जैसे अभ्यास मानसिक शांति और संतुलन के प्रभावी साधन माने गए हैं। ये न केवल तनाव को कम करते हैं, बल्कि एकाग्रता, आत्मनियंत्रण और सकारात्मक सोच को भी बढ़ाते हैं।

वैज्ञानिक अध्ययनों से भी यह सिद्ध हुआ है कि नियमित योग और ध्यान करने से मानसिक स्वास्थ्य में सुधार होता है। इसलिए शिक्षा में इनका समावेश छात्रों के **संतुलित और स्वस्थ व्यक्तित्व** के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

4. सांस्कृतिक संरक्षण हेतु (Cultural Preservation)

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध संस्कृतियों में से एक है। इसकी पहचान केवल परंपराओं, रीति-रिवाजों और त्योहारों से ही नहीं, बल्कि ज्ञान, विज्ञान, कला, भाषा और जीवन-दर्शन से भी होती है। **(भारतीय ज्ञान परंपरा)** इस संपूर्ण सांस्कृतिक विरासत का आधार है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती आई है। आज के वैश्वीकरण के दौर में पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है, जिससे युवा पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक जड़ों से दूर होती जा रही है। भाषा, परंपरा, रीति-रिवाज और सांस्कृतिक मूल्यों का क्षरण एक गंभीर समस्या बनता जा रहा है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली में निहित साहित्य, दर्शन, कला और परंपराएँ हमारी सांस्कृतिक पहचान का आधार हैं। इनका शिक्षा में समावेश छात्रों को अपनी **सांस्कृतिक विरासत से जोड़ता है** और उनमें गर्व की भावना उत्पन्न करता है। इससे न केवल सांस्कृतिक संरक्षण होता है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भारतीय पहचान को भी मजबूती मिलती है। IKS के माध्यम से हमारी प्राचीन परंपराएँ जैसे योग, यज्ञ, आयुर्वेद, संस्कार आदि सुरक्षित रहती हैं। IKS इन परंपराओं को संरक्षित कर उन्हें नई पीढ़ी तक पहुँचाने का कार्य करता है।

5. पर्यावरणीय संतुलन हेतु (Environmental Sustainability)

आधुनिक विकास के कारण पर्यावरणीय समस्याएँ—जैसे प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और संसाधनों का अंधाधुंध दोहन—तेजी से बढ़ रही हैं। इसका मुख्य कारण प्रकृति के प्रति असंतुलित और उपभोक्तावादी दृष्टिकोण है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली में प्रकृति को केवल संसाधन नहीं, बल्कि **पूजनीय और सह-अस्तित्व का आधार** माना गया है। **"वसुधैव कुटुम्बकम्"** और **"प्रकृति के साथ संतुलन"** जैसे सिद्धांत पर्यावरण संरक्षण की भावना को प्रोत्साहित करते हैं।

GYAN MANTHAN
MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

यदि इन सिद्धांतों को शिक्षा में शामिल किया जाए, तो छात्रों में पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी और संवेदनशीलता विकसित होगी। यह सतत विकास (Sustainable Development) की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है।

समावेश की रणनीतियाँ

1. **पाठ्यक्रम में परिवर्तन:**
   योग, ध्यान, आयुर्वेद और भारतीय दर्शन को शामिल करना

2. **शिक्षक प्रशिक्षण:**
   शिक्षकों को IKS के सिद्धांतों से प्रशिक्षित करना

3. **अनुसंधान और नवाचार:**
   भारतीय ज्ञान पर आधारित शोध को प्रोत्साहन देना

4. **तकनीकी उपयोग:**
   डिजिटल माध्यमों के जरिए IKS का प्रसार

5. **नीति समर्थन:**
   शिक्षा नीतियों में IKS को शामिल करना

GYAN MANTHAN
A MULITIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

चुनौतियाँ

- पारंपरिक और आधुनिक दृष्टिकोण के बीच संतुलन
- वैज्ञानिक प्रमाणिकता की कमी की धारणा
- संसाधनों और प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव
- छात्रों की बदलती रुचियाँ

संभावनाएँ

- वैश्विक स्तर पर योग और आयुर्वेद की स्वीकृति
- शिक्षा में नवाचार और अनुसंधान के नए अवसर
- भारत को ज्ञान के वैश्विक केंद्र के रूप में स्थापित करना

निष्कर्ष

आधुनिक शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली का समावेश समय की आवश्यकता है। यह शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन तक सीमित न रखकर जीवनोपयोगी और मूल्यपरक बनाता है। यह न केवल छात्रों के व्यक्तिगत विकास में सहायक है, बल्कि समाज और राष्ट्र के समग्र विकास के लिए भी अनिवार्य है।

आधुनिक विज्ञान और भारतीय परंपरा का समन्वय एक संतुलित और प्रभावी शिक्षा प्रणाली का निर्माण कर सकता है।

संदर्भ (References):

1. नई शिक्षा नीति 2020
2. भारतीय दर्शन एवं संस्कृति पर आधारित पुस्तकें
3. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की रिपोर्ट्स
4. विभिन्न शोध पत्र एवं जर्नल्स
5. स्वामी विवेकानंद के विचार
6. महात्मा गांधी के शिक्षा संबंधी लेख
7. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय, राष्ट्रीय शिक्षा नीतत 2020

www.education.gov.in
https://hi.wikipedia.org

GYAN MANTHAN
A MULITIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL